Vol 4 Issue 8 Feb 2015
ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

यशपाल शर्मा कृत उपन्यास'उड़ान' में व्यक्त समाज

दीपवाली देवी

सांराश : आज का समाज अधोमुख है। समाज के निवासी अपनी स्थिति में संतुष्ट नहीं हैं। नीतियों ने उन्हें अत्यधिक निर्धन बना दिया । फलस्वरूप उदर पूर्ति के लिए उन्हें अनेक अन्य बुराइयों की ओर अग्रसर होना पड़ता है। इस समय किसान, मजदूर तथा समाज के अन्य श्रमिक दुखी हैं, क्योंकि किसानों पर जमींदारों के माध्यम में कहर ढाया जा रहा है जबकि यंत्रीकरण के माध्यम में श्रमिकों की रोजी-रोटी पर प्रहार हो रहा है। समाज में अनेक ऐसी कुरीतियां घर कर गई , जिनके कारण लोगों का जीवन जर्जरित होता जा रहा है। अनमेल विवाह, बाल विवाह, छुआछूत, हिंदू-मुस्लिम अनैक्य, दहेज प्रथा, विदेश गमन रोक आदि अनेक ऐसी बातें समाज में प्रचलित है, जिसमें भारतीय समाज में उन्नति में बहुत दूर प्रतीत होता है। लोगों में ईर्ष्या-द्वेष का भाव भी बढ़ रहा है। जिसमें सामाजिक प्रगति पर कुठाराघात हो रहा है। भारतीय विदेशियों का पक्ष प्रबल कर अपनी स्वार्थ साधना कर रहे थे जिसमें समाज का नैतिक पतन भी हो रहा है। कन्या-भ्रूण हत्या हो रही है।

प्रस्तावना :

यह उल्लेखनीय है कि यशपाल शर्मा भी अपनी रचनाओं में समाज की उन्नति का स्वप्न देख रहे हैं। इस समाज का चित्र खींचते हुए डॉ. सुधीन्द्र कहते हैं-

" वर्तमान का कृष्ण पक्ष उनकी पुतलियों में प्रशिक्षण है। समाज की सब दुर्बलताओं, रूढ़ियों, कुरीतियों जैमें अशिक्षा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, सांप्रदायिक विद्वेष, जातीय जड़ता, स्वाभिमान भ्रंश, पश्चिमी सभ्यता में सांस्कृतिक गतिरोध नैतिक अनीति, धार्मिक अंधाचरण आदि की उन्होंने विगर्हणा की है और उदात जीवन के आदर्श का उद्बोधन किया है।"

यशपाल शर्मा ने उपन्यास 'उड़ान' में तत्कालीन समाज की सजीव झांकी प्रस्तुत की है। परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। सामाजिक संस्था मे परिवार का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है। यह समाज की मौलिक सार्वभौमिक तथा प्रमुख संस्था है। समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार द्वारा ही संभव है। अगर कहा जाए कि परिवार ही समाज को अमरत्व प्रदान करता है तो कोई अतिश्योकित न होगी। 'परिवार' शब्द के बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये। वर्गीस तथा लॉक का कथन - एक परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रूधिर अथवा गोद लेने के सम्बन्धों में एक दूसरे में बंधे रहते है, जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं, एक दूसरे के साथ अन्तः क्रिया और अन्तः संचार करते रहते है जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं जो पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-स्त्री और भाई-बहन की निजी सामाजिक भूमिका में, एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया और अन्तः संचार करते रहते हैं और जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं तथा उमें बनाए रखते हैं।"

अतः परिवार को सामान्य निवास आर्थिक सहयोग एवं प्रजनन के आधार पर समाज की अन्य संस्थाओं में अलग किया जा सकता है। सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज का अस्तित्व बना रहता है। स्नेह, आदर, श्रद्धा, वात्सल्य, त्याग, प्रेम और संतान कामना आदि भावनाओं में परिवार बंधे रहता है। अपनी संस्कृति धार्मिक विश्वास, सामाजिक मूल्यों का पाठ बालक को परिवार में ही मिलता है।

इस उदाहरण में समाज के दाम्पत्य संबंधों पर यशपाल जी के विचार स्पष्ट हैं कि वे इसका घोर विरोध करते थे। क्योंकि वे जानते थे कि जब तक छोटी-छोटी बुराइयों को नहीं सुधारा जाएगा तब तक राष्ट्रीयता को पल्लवित और पुष्पित करना कठिन होगा।

पुरुष-प्रधानता के कारण नारी के भावों के प्रकटीकरण की स्वतंत्रता न थी। समाज के अधिकांश लोग अत्याचार को सहने के आदी हो गए थे। उस समय का चित्रण करते हुए यशपाल जी कहते हैं-

''सुन कर प्रताप सिंह चुप हो गया। कुछ देर तक दोनों पति-पत्नी में मौन पसरा रहा। मौन को प्रताप सिंह ने भंग किया, बोला-''मुझे एक राय दो शांता।'' पति की बात सुन कर उसका सिर अपनी बाजू पर रखते हुए, अपना मुंह प्रताप सिंह की ओर करके बोली-''शुक्र है, आपने मुझे इस काबिल तो समझा। हां, राय क्या है?'' ''चाहता हूं, तनु के नाम दो एकड़ जमीन में लीची का बाग लगा दूं। बाग तनु के नाम पर दूंगा। जो रकम बाग में आया करेगी, उसके नाम बैंक में पैमें जमा करते रहेंगे। तनु के पढ़ने-लिखने और उसकी मैरिज करने में चित्रा को दे देंगे। मेरा विचार कैसा लगा?''

समाज में लोग निष्क्रियता हो विदेशी अंग्रेजों का प्रभुत्व स्वीकार कर बैठे थे। उनका सामना करने की चेष्टा नहीं करते थे। यशपाल जी समाज के अधिकांश लोगों की इस निष्क्रियता को देख बड़े दुखी थे। उन्हें यह अच्छी प्रकार विदित था कि जब तक समाज के सभी वर्गों को उद्बुद्ध नहीं किया जाएगा तब तक राष्ट्री आंदोलन सफल नहीं हो सकता। वे जन-जीवन के इसी दुर्भाग्य में चित्रित करते हुए कहते हैं-

'' गरीबी, चिंता और लाचारी में चंगे भले का दिमाग ठिकान नहीं रहता। मायका भी फटे हाल, गरीबी हालत में है। किसमें अपनी गर्ज पूरी करूं?'' चम्पा फर्श पर बैठ कर रोने लगी। सुन कर शांता को पैरों तले जमीन खिसकती मालूम होने लगी। काठ की मूर्ति सी शांता, महरी को टुकूर-टुकुर देख रही है। वह चम्पा को क्या उत्तर दे? उमें उत्तर के लिए कुछ सूझ ही नहीं रहा था। मंगला भी जड़-स्तब्ध आवाक सी चम्पा को देख रही थी। कुछ देर के पश्चात मंगला ढांढस बंधाते महरी में बोली-''प्रताप सिंह घर आते हैं तो तेरी तनख्वाह के लिए कहती हूं। तू रो नहीं। काम में अकल और होशोहवास कायम रख। तेरे दाने-पैमें कहीं दौड़े न जाएंगे। चल जा रसोई में।''

इस उद्धरण में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जन-जीवन की यह हीनावस्था उनकी जड़ता के कारण ही थी, जिसकी ओर यशपाल जी ने संकेत करके उन्हें जगाना चाहा है। इसमें एक बात बड़ी महत्वपूर्ण है कि हम केवल जड़ता के वश चंद व्यक्तियों के द्वारा पराधीन बना दिए गए हैं, क्यों न हम उन्हें देश में बाहर निकाल कर अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त करें।

अंग्रेजों के आने में पूर्व गांव-गांव में पंचायतें थी। ये पंचायतें समाज में एकरूपता स्थापित करती थी तथा उसकी उन्नति के कार्य करती थी। समाज के संगठन के सुदृढ़ बना कर ये पंचायतें बुराइयों को रोकती थी। यशपाल जी के अनुसार इसमें अब जन-जीवन में एकरूपता बनाए रखने का कार्य शिथिल पड़ गया है। हिंदू-मुस्लिम, ईसाई परस्पर एक-दूसरे में वैमनस्य रखते हैं। कारण यह है कि मुस्लमान और हिंदू यद्यपि परस्पर एक थे तथापि उनकी भावनाओं का बदल कर लाभ उठाने की चेष्टा की जा रही हैं। अंग्रेजों की नीति ''फूट डालो और राज्य करो'' का सबमें अधिक प्रभाव हिंदू-मुस्लिम ऐक्य पर पड़ा। महम्मद अली जिन्ना को पाकिस्तान की मांग में तो यह आग और भड़क उठी। ईसाई यद्यपि मूल रूप में भारतीय थे तथापि उन्हें अंग्रेजों ने अनेक सुविधाएं प्रदान कर अपना लिया था, फलस्वरूप वे भारतीयों में दूर ही रहते थे। यशपाल जी ने सामाजिक जीवन के इस भेद को दूर करने की चेष्टा की।

हिन्दू-मुस्लिम एकता पर ही उन्होंने 'उड़ान' उपन्यास की रचना की । इसके माध्यम में उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम में ऐक्य स्थापना करके जन-जीवन को सुसंगठित बनाने की चेष्ठा की। जन का जीवन अनेक विभीषिकाओं में ग्रस्त होने के कारण विषादमय है। लोग जैमें नींद में रहते है और किसी भी उत्सव इत्यादि में भाग लेने में हटते । लोगों का मानसिक ह्रास हो रहा है, समाज में दुःख का साम्राज्य है।

साहित्यकार समाज में रहते हुए समाज की अच्छाइयों-बुराइयों की ओर भी ध्यान देता है। वह अनुचित का खंडन करते हुए अच्छाइयों का पोषण करता है। इसी आधार पर यशपाल शर्मा का लक्ष्य आर्दशात्मक बन गया है। जब साहित्यकार अपने साहित्य में संत्रास, निरर्थकता, निराशा, कुरीतियां आदि की अभिव्यक्ति करता है तब उसका साहित्य यथार्थपरक हो जाता है। अतः 'उड़ान' उपन्यास 'शांता एवं उसके पति कर्णवीर के आदर्श और अनादर्श में जुड़े तथ्यों की संतुलित अभिव्यक्ति में जुड़ा है। 'शांता को अपने पति के कर्णवीर को शराब पिलाना और मारना पीटना बहुत बुरा लगा। अपने वैवाहिक जीवन में आज पहली बार उमें प्रताप सिंह पर इतना क्रोध आया था और जिंदगी में खिन्नता और निराशा हुई थी। शांता के मायके में उसका बाप और भाई केवल दिन त्योहार को एकाध पैग दारू पी लेते हैं। घर को वह मधुशाला नहीं बनने देते। उसने बाप को कई बार कहते सुना है -''शराबी व्यक्ति में कभी मत उलझो। सूफी हालत में उसमें बात करो।'' शांता का मन बच्चे की हालत देखकर इतना दुखी हुआ था कि वह उसी समय हवेली में जाकर प्रताप सिंह की उसके दोस्त के सामने खरी-खोटी सुनाना चाहती थी परंतु वह क्रोध के प्याले को बड़ी कठिनाई में मन मार कर पी गई थी।

रचना की मूल संवेदना ही उसका कथ्य है। 'उड़ान' उपन्यास व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिन्हें साहित्यकार यशपाल शर्मा ने जीया और भोगा है। इसका संबंध जीवन की उन यर्थाथ स्थितियों में है, जिनके भीतर मामूली में मामूली और भ्रष्ट में भ्रष्ट आदमी सांस लेता है। उपन्यासकार ने समग्र जीवन को उसकी सारी अच्छाईयों, बुराईयों सहित अपनी रचना में प्रस्तुत किया है। युग की आवश्यकता के अनुरूप उमें ढ़ाला है।

उपन्यासकार ने समाज में रहते हुए समाज की अच्छाइयों-बुराइयों की ओर भी ध्यान दिया है। उसने अनुचित का खंडन करते हुए अच्छाइयों का पोषण किया है। इस प्रकार उसका लक्ष्य आर्दशात्मक बन गया है। यशपाल शर्मा ने 'उड़ान' में संत्रास, निरर्थकता, निराशा, कुरीतियां आदि की अभिव्यक्ति किया है, इसीलिए यह उपन्यास यथार्थपरक हो गया है। अतः कथ्य आदर्श और अनादर्श में जुड़े तथ्यों की संतुलित अभिव्यक्ति में जुड़ गया है। लेखक ने किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के संपर्क में आकर उसकी अनुकूलता-प्रतिकूलता के अनुसार उसके अंतःकरण में कुछ प्रतिक्रिया की है, जो सुखात्मक या दुःखात्मक बन गई है। बाह्य संदर्भ के संपर्क में मन में सुख-दुःख का उत्पन्न हुआ है। जब मनुष्य किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के संपर्क में आता है तो उसकी अनुकूलता-प्रतिकूलता के अनुसार उसके अंतःकरण में कुछ प्रतिक्रिया होने लगती है, जो या तो सुखात्मक होते है या दुःखात्मक। बाह्य संदर्भ के संपर्क में मन में सुख-दुःख का उत्पन्न होना भी

भाव है। यही स्पष्ट करना उपन्यासकार यशपाल शर्मा का उद्देश्य रहा है।

---

१. प्रो. सुधींद्र, हिंदी कविता में युगांतर (प्रथम संस्करण), पृष्ठ-६६
२.ई.डब्ल्यू.वर्गीस तथा एच.जे.लॉक, द फैमिली फ्राम इंस्टीट्यूशन आफ कम्पेनियशिन, पृ.८
३.उडान, यशपाल शर्मा, पृ. ८२
४.उडान, यशपाल शर्मा, पृ. ३४
५.उडान, यशपाल शर्मा, पृ. २४

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org